ओमशान्ति मीडिया

महाशिवरात्रि विशेषांक

परमात्मा शिव भगवानुवाच...

मैं... अब वसुंधरा पर...

सत्यम शिवम सुंदरम ।।

उनकी अदायगी निराली, उनका अंदाज़ निराला, वे समझते भी हैं, समझाते भी हैं, मानव मन की व्यथा और उसकी आत्मकथा का दर्शन कराते भी हैं। आत्म दर्शन की एक गोपनीय स्थिति जो सिर्फ और सिर्फ शांत मन से ही समझी जाती है। उसका संज्ञान देना, उसपर चिंतन कराना और बार-बार याद दिलाकर उसे सुव्यवस्थित और सुगठित करना और वैसा ही सबको बनाने की प्रेरणा देना, ये कार्य केवल और केवल परमात्मा का होता है। धर्म दर्शन, शास्त्र दर्शन, कथायें, रोचक कथायें, दंत कथायें, लघु कथायें सबने बहुत पढ़ीं और सुनी होंगी लेकिन मानव इतिहास में मानव की स्थिति, परिस्थिति, उसके काल, उसकी आयु और उसकी अवस्था का वर्णन वो कर पाता है जो उससे अलग होता है। वो ही निराकार परमात्मा शिव दिव्य दर्शन और दिव्य साक्षात्कार को समेटे हुए हम सभी को अपनी ओर बुला रहे हैं, उठो, जागो, मुझे पहचानों, मैं ही वो परमात्मा हूँ जो आपको समझ सकता है, भय मुक्त कर सकता है, चिंता मुक्त कर सकता है।

परमात्मा भी सूक्ष्म रूप से किसी के द्वारा कार्य करा रहा है। और दुनिया में माया का भी प्रवेश सूक्ष्मता के साथ होता है। दोनों को पहचानने के लिए कि ये परमात्मा है और ये माया है, बड़ा सीधा और सरल उपाय है, जो चीज़ हमें अव्यवस्थित करे, दुःखी करे, अशांत करे, अतृप्त करे, अहंकारी बनाये, सम्बंधों से दूर करे वो माया। जो हमको शांत बनाये, सुखी बनाये, एक-दूसरे को आत्मीयता के साथ नज़दीक लाये, एक-दूसरे का सम्मान करना सिखाये, वो परमात्मा की सूक्ष्म शक्तियों का वरदान। क्योंकि मनुष्य जैसा है वैसा सिखाता है, परमात्मा जैसे हैं वैसा सिखाते हैं। सोच नई है, संकल्प नया है लेकिन मान्यता पुरानी है, उस पुरानी मान्यता से निकलना आसान नहीं है। लेकिन फिर भी इसे कुछ देर के लिए शांत होकर समझ तो सकते हैं। इतना कुछ आज हमारे सामने हो रहा है, हम इससे निकलना भी चाहते, एक ऐसी दुनिया भी चाहते जहाँ ये सब न हो। लेकिन उस दुनिया की तैयारी इतने सालों से परमात्मा कुछ आत्माओं को लेकर कर रहे हैं। वो दुनिया जहाँ सबकुछ एकतार, एक सुर, एक लय में होगा। वहाँ राजा होगा लेकिन प्रजा भी राजा की तरह ही रहती है। यथा राजा तथा प्रजा। सबके पास भरपूरता और सबसे बड़ी बात यह ज्ञान होना कि वो एक आत्मा और शरीर के मालिक हैं। बस ये दोनों चीज़ों का ज्ञान होना उन्हें भयमुक्त बना देता, मोहजीत बना देता। आज चक्र के अंतिम दौर में हम हैं जहाँ एक पल और एक क्षण का भी भरोसा नहीं है। न कोई भरोसा दिला सकता है। परिस्थितियां उथल खा रही हैं, लोग उसके इंतज़ाम के लिए ज्योतिष और वास्तु का सहारा ले रहे हैं, क्योंकि वो जीना चाहते हैं। तो क्या एक बार आप प्रायोगिक रूप से ही इस तरफ नहीं देख सकते हैं जहाँ पर परमात्मा आबू पर्वत से इतनी सारी आत्माओं को रोज़ ज्ञान अमृत का रसपान कराता और उनको अमर बनाता जाता। इस परमात्म दिव्य कर्त्तव्य को जो जान और पहचान लेगा वो इस समय की गति को भी जान और पहचान लेगा। ये शिवरात्रि उस निराकार परमात्मा शिव के अवतरण का ही यादगार है।

अब ये पढ़ते हुए आपको एहसास होगा कि जो शास्त्रगत गायन है यदा यदा हि धर्मस्य... मतलब जब जब धर्म की अति ग्लानि होगी... अब आप बताओ इससे ज़्यादा भारत की धर्मग्लानि क्या हो सकती है जिसमें सारे धर्म गिरावट की स्थिति में हैं। क्यों गिरावट की स्थिति में हैं, क्योंकि सभी दैहिक आधारित धर्म हैं। परमात्मा आत्म ज्ञान देकर हमें समानता की महसूसता कराते, एक समान बनाकर सबको उठाते, विश्व एक परिवार की फीलिंग देकर इस धरा वसुधैव कुटुम्बकम की स्थापना करते। अब इस ज्ञान को देने के लिए कोई तो माध्यम बनेगा ही ना! तो ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप निराकार परमात्मा शिव का अवतरण सूक्ष्म रूप से एक मानवी तन में होता है जिसे परमात्मा ने ब्रह्मा नाम दिया। जो सृष्टि के आदि पिता हैं, जिनके संकल्पों से इतने सारे ब्रह्माकुमार कुमारियाँ उस परमात्म कार्य को स्वर्णिम आकार दे रहे हैं। ये निमित्त ब्रह्माकुमारियाँ और ब्रह्माकुमार इस कार्य को, इस दिव्य कर्त्तव्य को आगे बढ़ा रहे हैं। आप कब कर रहे हैं ये दिव्य दर्शन!

शुभकामना संदेश

सर्व के अति प्यारे पिता परमात्मा जो सर्व के कल्याणकारी हैं, उनका सभी आत्माओं के प्रति शुभ चिंतन और संदेश है कि हे बच्चों! आप सभी को अब समय को नज़दीक से पहचानने की ज़रूरत है, जहाँ आये दिन रोज़ नई चुनौतियाँ हमारे सामने होती हैं। आज समाज की दशा और दिशा दोनों दयनीय हैं। ऐसे में वे कहते हैं कि आपकी स्थिति जब श्रेष्ठ होगी, तो समाज तो अच्छा होगा ही होगा। इसी पुण्य कर्म को वो शिव कल्याणकारी पिता परमात्मा इस धरा पर अवतरित हो कर रहे हैं। इन पलों को अनुभव करने और कराने, सबको अपने पिता के शुभ आगमन का संदेश पहुँचाने का यही उचित समय है। ताकि हर आत्मा अपने पिता से सुख-शांति का वर्सा प्राप्त करे और खुश होकर जीवन जिये और दूसरों के भी सुखी जीवन की कामना करे। इन्हीं शुभ आशाओं के साथ शिवरात्रि की आप सभी को कोटि-कोटि बधाई। - **ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी।**

परम शक्ति से जुड़ने से होगा बदलाव

परम शक्ति से योग हमें सब कुछ देगा, हमें स्वयं को बदलने की ताकत भी प्रदान करेगा, हर असंभव कार्य संभव भी हो जायेगा। बस ज्ञान और अनुभव को बढ़ाने के लिए अपनी सत्य पहचान और परमात्मा की सत्य पहचान कर उससे सम्बंध जोड़ हमें आगे बढ़ना है। इसके लिए अपनी इंद्रियों पर संयम की भी आवश्यकता है, जिससे हम सम्पूर्ण प्रकृति पर नियंत्रण कर सकें। बस स्वयं को हर पल, हर क्षण जागृत रखने की आवश्यकता है। इस शरीर रूपी साधन को मजबूत बनाना है, जो नियम और संयम से ही संभव है। राजयोग एक ऐसा माध्यम है जिससे हमारे तन, मन दोनों निरोगी रह सकते हैं और हम नर से नरायण भी बन सकते हैं। - **भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी।**